21-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

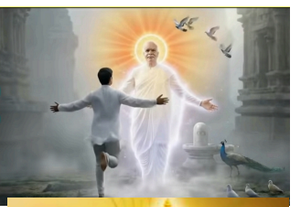

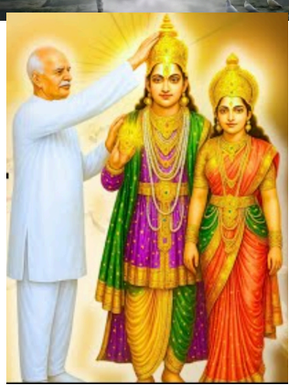

"मीठे बच्चे - तुम बाप के पास आये हो अपनी सोई हुई तकदीर जगाने, तकदीर जगना माना विश्व का मालिक बनना"

प्रश्नः-कौन सी खुराक तुम बच्चों को बाप समान बुद्धिवान बना देती है?

Point to be Noted
Equivalent to God

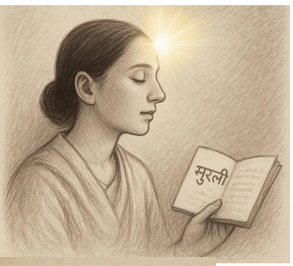

उत्तर: यह पढ़ाई है तुम बच्चों के बुद्धि की खुराक। जो रोज़ पढ़ाई पढ़ते हैं अर्थात् इस खुराक को लेते हैं उनकी बुद्धि पारस बन जाती है। पारसनाथ बाप जो बुद्धिवानों की बुद्धि है वह तुम्हें आपसमान पारसबुद्धि बनाते हैं।

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

ओ तक़दीर जगा कर आई हूँ
ओ तक़दीर जगा कर आई हूँ
जगा कर आई हूँ
मैं एक नई दुनिया बसा कर लाई हूँ
दुनिया बसा कर लाई हूँ
ओ तक़दीर जगा कर आई हूँ
ओ तक़दीर जगा कर आई हूँ
जगा कर आई हूँ
मैं एक नई दुनिया बसा कर लाई हूँ
दुनिया बसा कर लाई हूँ
www.hindigeetn
किस दिल का सुनाऊँ फ़साना हो
आँख मिलते ही बदला
ज़माना ज़माना हो
किसे दिल का सुनाऊँ फ़साना
आँख मिलते ही बदला ज़माना
मेरे होंठों पे गीत किसी के
मेरे गीतों में बोल ख़ुशी के
रसीले कुछ नग़मों चुरा कर लाई हूँ
नग़मों चुरा कर लाई हूँ
www.hindigeetn
हुआ चुपके ही चुपके इशारा हो
मेरे दिल को मिला एक सहारा सहारा हो
हुआ चुपके ही चुपके इशारा
मेरे दिल को मिला एक सहारा
आई मस्तानी रुत अलबेली
दिल बेचा, मुहब्बत ले ली
किसी को इस दिल में छुपाकर लाई हूँ
दिल में छुपाकर लाई हूँ हो
www.hindigeetn
तक़दीर जगा कर आई हूँ
तक़दीर जगा कर आई हूँ
जगा कर आई हूँ
मैं एक नई दुनिया बसा कर लाई हूँ
दुनिया बसा कर लाई हूँ

गीत:-तकदीर जगाकर आई हूँ.....

Click

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्॥
हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण भूतोंका सनातन बीज मुझको ही जान। मैं बुद्धिमानोंकी बुद्धि और तेजस्वियोंका तेज हूँ॥ १० ॥ अध्याय- 7
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ॥
हे भरतश्रेष्ठ! मैं बलवानोंका आसक्ति और कामनाओंसे रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतोंमें धर्मके अनुकूल अर्थात् शास्त्रके अनुकूल काम हूँ॥ ११ ॥

कापारी खुशी

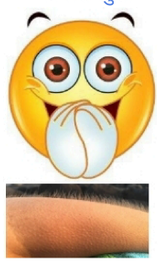

ओम् शान्ति। गीत की लाइन सुनकर के भी मीठे-मीठे बच्चों के रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। है तो कॉमन गीत परन्तु इनका सार और कोई नहीं

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

But we know, How Lucky & Great we are..!

Earlier we were praying

Now we have the light

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

21-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

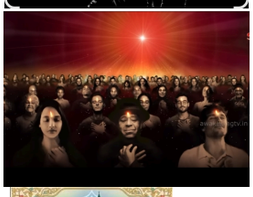

जानते। बाप ही आकर गीत, शास्त्र आदि का अर्थ समझाते हैं। मीठे-मीठे बच्चे यह भी जानते हैं कि कलियुग में सबकी तकदीर सोई हुई है। सतयुग में सबकी तकदीर जगी हुई है। सोई हुई तकदीर को जगाने वाला और श्रीमत देने वाला अथवा तदबीर बनाने वाला एक ही बाप है। वही बैठ बच्चों की तकदीर जगाते हैं। Example जैसे बच्चे पैदा होते हैं और तकदीर जग जाती है। बच्चा जन्मा और उनको यह पता पड़ जाता है कि हम वारिस हैं। हूबहू यह फिर बेहद की बात है। बच्चे जानते हैं - कल्प-कल्प हमारी तकदीर जगती है फिर सो जाती है। पावन बनते हैं तो तकदीर जगती है। पावन गृहस्थ आश्रम कहा जाता है। आश्रम अक्षर पवित्र होता है। पवित्र गृहस्थ आश्रम, उनके अगेन्स्ट फिर है अपवित्र पतित गृहस्थ धर्म। आश्रम नहीं कहेंगे। गृहस्थ धर्म तो सबका है ही। जानवरों में भी है। बच्चे तो सब पैदा करते ही हैं। जानवरों को भी कहेंगे गृहस्थ धर्म में हैं। अब बच्चे जानते हैं - हम स्वर्ग में पवित्र गृहस्थ आश्रम में थे, देवी-देवता थे। उन्हों की महिमा भी गाते हैं सर्वगुण सम्पन्न, 16

ये पक्का समझ लो..

v/s

Cute Family

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

21-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

कला सम्पूर्ण..... तुम खुद भी गाते थे। अब समझते हो हम मनुष्य से देवता फिर से बन रहे हैं। गायन भी है मनुष्य से देवता.....। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी देवता कहते हैं। ब्रह्मा देवताए नम: फिर कहते हैं शिव परमात्माए नम:। अभी उनका अर्थ भी तुम जानते हो। वह तो अन्धश्रद्धा से सिर्फ कह देते हैं। अब शंकर देवताए नम: कहेंगे। शिव के लिए कहेंगे शिव परमात्माए नम: तो फ़र्क हुआ ना। वह देवता हो गया, वह परमात्मा हो गया। शिव और शंकर को एक कह नहीं सकते। तुम जानते हो हम बरोबर पत्थरबुद्धि थे, अब पारसबुद्धि बन रहे हैं। देवताओं को तो पत्थरबुद्धि नहीं कहेंगे। फिर ड्रामा अनुसार रावण राज्य में सीढ़ी उतरनी है। पारसबुद्धि से पत्थरबुद्धि बनना है। सबसे बुद्धिवान तो एक ही बाप है। अभी तुम्हारी बुद्धि में दम नहीं रहा है। बाप उनको बैठ पारसबुद्धि बनाते हैं। तुम यहाँ आते हो पारसबुद्धि बनने। पारसनाथ के भी मन्दिर हैं। वहाँ मेले लगते हैं। परन्तु यह किसको पता नहीं कि पारसनाथ कौन है। वास्तव में पारस बनाने वाला तो बाप ही

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

है। वह है बुद्धिवानों की बुद्धि। यह ज्ञान है तुम बच्चों की बुद्धि के लिए खुराक, इससे बुद्धि कितना पलटती है। यह दुनिया है कांटों का जंगल।

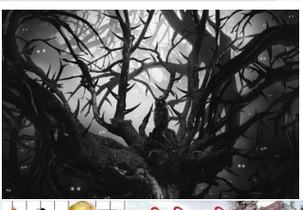

कितना एक-दो को दु:ख देते हैं। अभी है ही तमो-प्रधान रौरव नर्क। गरुड़ पुराण में तो बहुत रोचक बातें लिख दी हैं।

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

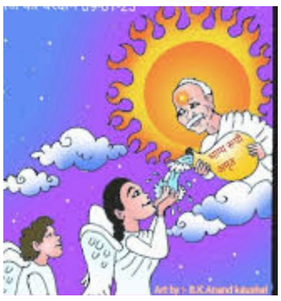

अभी तुम बच्चों की बुद्धि को खुराक मिल रही है। बेहद का बाप खुराक दे रहे हैं। यह है पढ़ाई। इसको ज्ञान अमृत भी कह देते हैं। कोई जल आदि है नहीं। आजकल सब चीज़ों को अमृत कह देते हैं। गंगाजल को भी अमृत कहते हैं। देवताओं के पैर धोकर पानी रखते हैं, उसको अमृत कह देते हैं। अब यह भी बुद्धि से समझने की बात है ना। यह अंचली अमृत है वा पतित-पावनी गंगा का जल अमृत है? अंचली जो देते हैं वह ऐसे नहीं कहते कि यह पतितों को पावन बनाने वाला है, गंगाजल के लिए कहते हैं पतित-पावनी है। कहते भी हैं मनुष्य

Judge Yourself

इतना तो करना स्वामी,
जब प्राण तन से निकले
गोविन्द नाम लेकर,
फिर प्राण तन से निकले ॥

21-02-2026 ...ान्ति "बापदादा"

मरे तो गंगाजल मुख में हो। दिखाते हैं अर्जुन ने बाण मारा फिर अमृत जल पिलाया। तुम बच्चों ने कोई बाण आदि नहीं चलाये हैं। एक गांव हैं जहाँ बाणों से लड़ते हैं। वहाँ के राजा को ईश्वर का अवतार कहते हैं। अब ईश्वर का अवतार तो कोई हो नहीं सकता। वास्तव में सच्चा-सच्चा सतगुरू तो एक ही है, जो सर्व का सद्गति दाता है। जो सभी आत्माओं को साथ ले जाते हैं। बाप के सिवाए वापिस कोई भी ले जा नहीं सकता। ब्रह्म में लीन हो जाने की भी बात नहीं है। यह नाटक बना हुआ है। सृष्टि का चक्र अनादि फिरता ही रहता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह अभी तुम जानते हो और कोई नहीं जानता। मनुष्य अर्थात् आत्मायें अपने बाप रचयिता को भी नहीं जानती हैं, जिसको याद भी करते हैं ओ गॉड फादर। हद के बाप को कभी गॉड फादर नहीं कहेंगे। गॉड फादर अक्षर बहुत रिस्पेक्ट से कहते हैं। उनके लिए ही गाते हैं पतित-पावन, दु:ख हर्ता सुख कर्ता है। एक तरफ कहते हैं वह दु:ख हर्ता सुख कर्ता है और जब कोई दु:ख होता है वा बच्चा

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

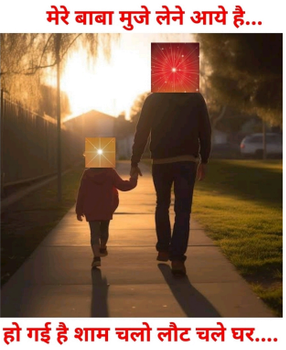

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

चढ़ाओ नशा...

How Great we are...!

Exclusive Authority of Shiv baba

Contradiction

आदि मर जाता है तो कह देते ईश्वर ही दु:ख-सुख देता है। ईश्वर ने हमारा बच्चा ले लिया। यह क्या किया? अब महिमा एक गाते हैं और फिर कुछ होता है तो ईश्वर को गालियाँ देते हैं। कहते भी हैं ईश्वर ने बच्चा दिया है, फिर अगर उसने वापिस ले लिया तो तुम रोते क्यों हो? ईश्वर के पास गया ना।

Simple Logic

सतयुग में कभी कोई रोते नहीं। बाप समझाते हैं रोने की तो कोई दरकार नहीं। आत्मा को अपने हिसाब-किताब अनुसार जाए दूसरा पार्ट बजाना है। ज्ञान न होने कारण मनुष्य कितना रोते हैं, जैसे पागल हो जाते हैं। यहाँ तो बाप समझाते हैं - अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना..... नष्टोमोहा होना है। हमारा तो एक ही बेहद का बाप है, दूसरा न कोई। ऐसी अवस्था बच्चों की होनी चाहिए।

अर्जुन उवाच—
नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव ॥

अर्जुन बोले—हे अच्युत ! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया और मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है, अब मैं संशय रहित होकर स्थित हूँ, अतः आपकी आज्ञा का पालन करूँगा ॥ ७३ ॥

Shloka 73
Arjuna replied to the Almighty Krishna:
By your wonderful Grace, Dear Lord and Master of the Universe, I have discovered this light in my mind and soul. My illusions no longer remain with Me. My faith in You is strong. O Great Lord Krishna, I shall devote my very life to following your advice and instructions.

Readmore @ www.FaceBook.com/TheGita Twitter @KrishnaGeeta

मोहजीत राजा की कथा भी सुनी है ना। यह हैं सब दन्त कथायें। सतयुग में कभी दु:ख की बात नहीं होती। न कभी अकाले मृत्यु होती है।

Story of the King who conquered Attachment

Refer Page-15 for story

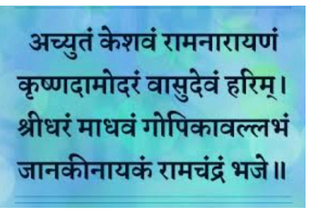

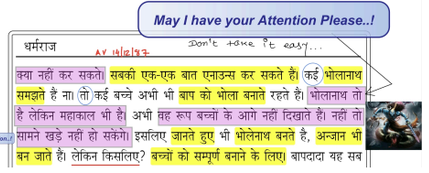

21-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

तुम बच्चे जानते हैं हम अभी काल पर जीत पाते हैं, बाप को महाकाल भी कहते हैं। कालों का काल तुमको काल पर जीत पहनाते हैं अर्थात् काल कभी खाता नहीं। काल आत्मा को तो नहीं खा सकता। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है, उसको कहते हैं काल खा गया। बाकी काल कोई चीज़ नहीं है। मनुष्य महिमा गाते रहते, समझते कुछ भी नहीं। गाते हैं अचतम् केशवम्..... अर्थ कुछ नहीं समझते। बिल्कुल ही मनुष्य समझ से बाहर हो गये हैं। बाप समझाते हैं यह 5 विकार तुम्हारी बुद्धि को कितना खराब कर देते हैं। कितने मनुष्य बद्रीनाथ आदि पर जाते हैं। आज दो लाख गये, 4 लाख गये..... बड़े-बड़े ऑफिसर्स भी जाते हैं तीर्थ करने। तुम तो जाते नहीं तो वह कहेंगे यह बी.के. तो नास्तिक हैं क्योंकि भक्ति नहीं करते। तुम फिर कहते हो जो भगवान को नहीं जानते वो नास्तिक हैं। बाप को तो कोई नहीं जानते इसलिए इनको आरफन की दुनिया कहा जाता है। कितना आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। यह सारी दुनिया बाबा का घर है ना। बाप सारी दुनिया के बच्चों को

Definition of

21-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पतित से पावन बनाने आते हैं। आधाकल्प बरोबर पावन दुनिया थी ना। गाते भी हैं राम राजा, राम प्रजा, राम साहूकार है..... वहाँ फिर अधर्म की बात कैसे हो सकती। कहते भी हैं वहाँ शेर-बकरी इकट्ठे जल पीते हैं फिर वहाँ रावण आदि कहाँ से आये? समझते नहीं। बाहर वाले तो ऐसी बातें सुनकर हंसते हैं।

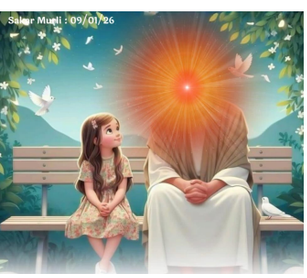

तुम बच्चे जानते हो - अभी ज्ञान का सागर बाप आकर हमें ज्ञान देते हैं। यह पतित दुनिया है ना। अब प्रेरणा से पतितों को पावन बनायेंगे क्या? बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ तो जरूर भारत में ही आया था। अब भी कहते हैं मैं ज्ञान का सागर आया हूँ। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा में ही सारा ज्ञान है, वही बाप बैठ बच्चों को यह सब बातें समझाते हैं। शास्त्रों में सब है दंत कथायें। नाम रख दिया है - व्यास भगवान ने शास्त्र बनाये। अब वह व्यास था

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

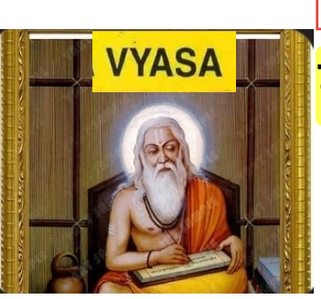

भक्ति मार्ग का। यह है व्यास देव, उनके बच्चे तुम सुख देव हो। अब तुम सुख के देवता बनते हो। सुख का वर्सा ले रहे हो व्यास से, शिवाचार्य से।

Swamaan

व्यास के बच्चे तुम हो। परन्तु मनुष्य मूंझ न जाएं इसलिए कहा जाता है शिव के बच्चे। उनका असुल नाम है ही शिव। तो अब बाप कहते हैं -

None but Only One

किसी देहधारी को मत देखो। जबकि शिवबाबा सम्मुख बैठे हैं। आत्मा को जाना जाता है, परमात्मा को भी जाना जाता है। वह परमपिता परमात्मा शिव। वही आकर पतित से पावन बनने का रास्ता बताते हैं। कहते हैं मैं तुम आत्माओं का बाप हूँ। आत्मा को रियलाइज़ किया जाता है, देखा नहीं जाता है। बाप पूछते हैं अब तुमने अपनी आत्मा को रियलाइज़ किया? इतनी छोटी सी आत्मा में अविनाशी पार्ट नूंधा हुआ है। जैसे एक रिकार्ड है।

Mind very well...

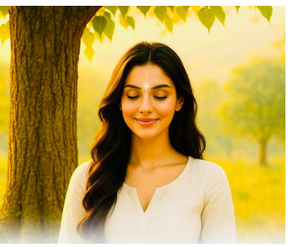

तुम जानते हो हम आत्मा ही शरीर धारण करती

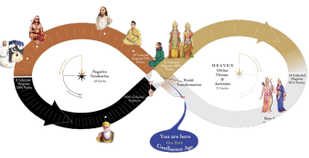

हैं। पहले तुम देह-अभिमानी थे, अब देही-अभिमानी हो। तुम जानते हो हम आत्मा 84 जन्म लेती हैं। उनका एन्ड (अन्त) नहीं होता। कोई-कोई पूछते हैं यह ड्रामा कब से शुरू हुआ? परन्तु यह तो अनादि है, कभी विनाश नहीं होता। इनको कहा जाता है बना-बनाया अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। जैसे अनपढ़ बच्चों को पढ़ाई दी जाती है। आत्मा ही शरीर में रहती है। यह है पत्थरबुद्धि के लिए फूड (भोजन), बुद्धि को समझ मिलती है। तुम बच्चों के लिए बाबा ने चित्र बनवाये हैं। बहुत सहज हैं। यह है त्रिमूर्ति ब्रह्मा-विष्णु-शंकर। अब ब्रह्मा को भी त्रिमूर्ति क्यों कहते हैं? देव-देव महादेव। एक-दो के ऊपर रखते हैं, अर्थ कुछ भी नहीं जानते। अब ब्रह्मा देवता कैसे हो सकता। प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ होना चाहिए। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। बाप कहते हैं मैं इस शरीर में प्रवेश कर इन द्वारा तुमको समझाता हूँ। इनको अपना बनाता हूँ। इनके बहुत जन्मों के अन्त में आता हूँ। यह भी 5 विकारों का संन्यास करते हैं। संन्यास करने वाले को योगी, ऋषि कहा

Invalid Question

Eternal

Immortal

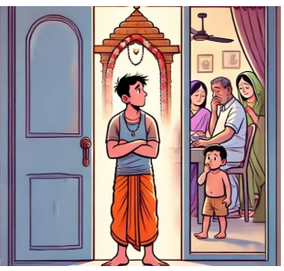

जाता है। अभी तुम राजऋषि बने हो। 5 विकारों का संन्यास तुमने किया है तो नाम बदलता है। तुम तो राजयोगी बनते हो। तुम प्रतिज्ञा करते हो। वह संन्यासी लोग तो घर-बार छोड़ चले जाते हैं। यहाँ तो स्त्री-पुरुष इकट्ठे रहते हैं, प्रतिज्ञा करते हैं हम विकार में कभी नहीं जायेंगे। मूल बात है ही विकार (काम) की।

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्॥
हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण भूतोंका सनातन बीज मुझको ही जान। मैं बुद्धिमानोंकी बुद्धि और तेजस्वियोंका तेज हूँ॥ १० ॥ अध्याय- 7
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ॥
हे भरतश्रेष्ठ! मैं बलवानोंका आसक्ति और कामनाओंसे रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतोंमें धर्मके अनुकूल अर्थात् शास्त्रके अनुकूल काम हूँ॥ ११ ॥

G – Generator
O – Operator
D – Destroyer
(सृष्टि का रचयिता, संचालक और परिवर्तक)

तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा रचयिता है। वह नई रचना रचते हैं। वह बीजरूप, सत् चित आनन्द का सागर, ज्ञान का सागर है। स्थापना, विनाश, पालना कैसे करते हैं - यह बाप जानते हैं, मनुष्य नहीं जानते। फट से कह देते तुम बी.के. तो दुनिया का विनाश करेंगी। अच्छा, तुम्हारे मुख में गुलाब। कहते हैं यह तो विनाश के लिए निमित्त बनी हैं। न शास्त्रों को, न भक्ति को, न गुरूओं को मानती हैं, सिर्फ अपने दादा को मानती हैं। लेकिन बाप तो खुद कहते हैं यह पतित शरीर है, मैंने इनमें प्रवेश

किया है। पतित दुनिया में तो कोई पावन होता नहीं। मनुष्य तो जो सुनी-सुनाई बातें सुनते हैं वह बोले देते हैं। ऐसी सुनी-सुनाई बातों से तो भारत दुर्गति को पाया है, तब बाप आकर सच सुनाए सबकी सद्गति करते हैं। अच्छा!

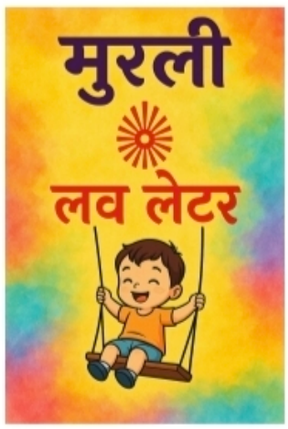

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) बाप से सुख का वर्सा लेकर सुख का देवता बनना है। सबको सुख देना है। राजऋषि बनने के लिए सर्व विकारों का संन्यास करना है।

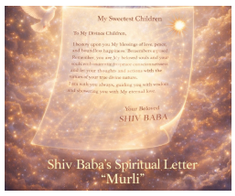

2) पढ़ाई ही सच्ची खुराक है। सद्गति के लिए सुनी-सुनाई बातों को छोड़ श्रीमत पर चलना है। एक बाप से ही सुनना है। मोहजीत बनना है।

Method/Process/Instrument

21-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- अपने असली संस्कारों को इमर्ज कर सदा हर्षित रहने वाले ज्ञान स्वरूप भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

जो बच्चे ज्ञान का सिमरण कर उसका स्वरूप बनते हैं वह सदा हर्षित रहते हैं।

सदा हर्षित रहना - यह ब्राह्मण जीवन का असली संस्कार है।

दिव्य गुण अपनी चीज़ है, अवगुण माया की चीज़ है जो संगदोष से आ गये हैं। अब उसे पीठ दे दो और अपने आलमाइटी अथॉरिटी की पोजीशन पर रहो तो सदा हर्षित रहेंगे।

कोई भी आसुरी वा व्यर्थ संस्कार सामने आने की हिम्मत भी नहीं रख सकेंगे।

स्लोगन: सम्पूर्णता का लक्ष्य सामने रखो तो संकल्प में भी कोई आकर्षण आकर्षित नहीं कर सकती।

Points:

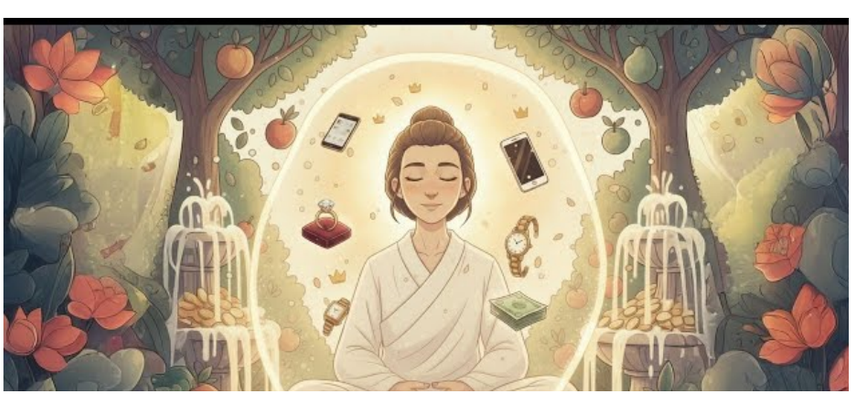

21-02-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

ये अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

एकता के लिए एक रूहानी तावीज़ सदा अपने पास रखना कि रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है।

यह रिगार्ड का रिकार्ड सफलता का अविनाशी रिकार्ड हो जायेगा।

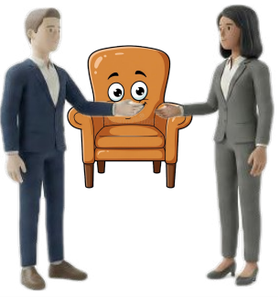

मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो - "पहले आप" - यह महामन्त्र मन से पक्का रहे।

यथार्थ रूप से पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझते हुए इस महामन्त्र को आगे बढ़ाते सफलता को पाते रहो, यह मन्त्र और तावीज़ सदा साथ रहे तो प्रत्यक्षता का नगाड़ा बज जायेगा।

मोहजीत राजा की कथा

एक बार एक राजकुमार अपने कई सैनिकों के साथ शिकार पर गया। वह बहुत अच्छा शिकारी था। शिकार के पीछे वह इतना दूर निकल गया कि सारे सिपाही पीछे छूट गये। अकेले पड़ने का एहसास होते ही वह रुक गया। उसे प्यास भी लग रही थी। उसे पास में ही एक कुटिया दिखाई दी। वहाँ एक सन्त ध्यान-मग्न होकर बैठे थे। राजकुमार ने संत के पास जाकर पानी माँगा। सन्त ने राजकुमार का परिचय पूछा। राजकुमार ने सन्त से कहा कि वह एक राजा का लड़का है जिसने मोह को जीत लिया है। सन्त बोला - असंभव। एक राजा और मोह पर विजयी? यहाँ मैं एक संन्यासी हूँ तब भी मोह को जीत नहीं पा

मैं एक संन्यासी हूँ तब भी मोह को जीत नहीं पा रहा हूँ और तुम कहते हो कि तुम्हारे पिता जी एक राजा हैं और मोह को जीत चुके हैं। राजकुमार ने कहा, न केवल मेरे पिता जी बल्कि सारी प्रजा ने भी मोह को जीत रखा है। सन्त को इसका विश्वास नहीं हुआ तो राजकुमार ने कहा कि आप चाहें तो इस बात की परीक्षा ले सकते हैं। सन्त ने राजकुमार की कमीज़ माँगी और उसे कुछ और पहनने को दिया। सन्त ने तब वहाँ एक जानवर के लाश पड़ा देखकर उसके खून से राजकुमार की कमीज़ पर दब्बे लगाया और वह शहर में चिल्लाता हुआ गया कि राजकुमार को एक शेर ने मार दिया। शहर के लोग कहने लगे - अगर वह चला गया तो क्या हुआ। आप क्यों चिल्ला रहे हो? वह उसका भाग्य था। सन्त ने सोचा कि प्रजा नहीं चाहती होगी कि राजकुमार भविष्य में राजा बने इसलिए इस तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त कर रही है। सन्त महल में गया और राजकुमार की मौत की बात उसके भाई और बहन को सुनाई। उन्होंने कहा कि अब तक वह हमारा भाई था, अब किसी और का भाई बन जायेगा। कोई हमेशा के लिए साथ तो नहीं रह सकता इसलिए रोने और चिल्लाने की आवश्यकता नहीं है। सन्त को लगा कि बहन को दूसरा भाई अधिक पसंद है और भाई खुश है कि उसे अब राज्य मिलेगा इसलिए दोनों ने ऐसी प्रतिक्रिया व्यक्त की। फिर वह पिता के पास गया और खबर सुनाई। पिता बोले, आत्मा तो अमर और अविनाशी है इसलिए चिल्लाने की कोई जरूरत नहीं है। वह मेरा पुत्र था इसलिए मैंने सोचा कि वह राजा बनने वाला है लेकिन अब दूसरे पुत्र को राज्य मिलेगा। मैं उसे वापस नहीं ला सकता हूँ इसलिए दुःख क्यों करूँ। सन्त सोच में पड़ गया। लेकिन अभी और भी दो लोग बाकी थे। राजकुमार की माता और पत्नी। सन्त ने सोचा कि ये दो व्यक्ति तो जरूर व्याकुल होंगे। लेकिन वहाँ से भी वैसा ही उत्तर पाकर सन्त आश्चर्य में पड़ गया। उसे अपने आप पर ही विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सच देख रहा है। आखिर हारकर उसने अपने आने का उद्देश्य और राजकुमार के जिन्दा होने की बात सबको सुना दी। राजकुमार ने वापस आकर अपना राज्यभाग्य सँभाला और हर चीज़ पहले की तरह चलती रही।

आध्यात्मिक भाव: - मोह पाँच विकारों में से एक है। वह हमारी शान्ति को छीन लेता है। परखने की शक्ति को खत्म कर देता है। मोह सच्चाई को खत्म करता है। जिसमें मोह है उसमें बुद्धिमानी नहीं हो सकती । बाबा इस कथा से शिक्षा देना चाहते हैं कि ना हमें दूसरों में मोह हो और ना ही दूसरों का हममें मोह हो। तब ही हम विश्व के मालिक बन सकते हैं।

If you wish to stay connected, Here is the link